RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 16वां

अंक : 61वां

वेदी विवेक जैन

निरीहा देवांग गाला

विभूति अभिषेक जोगी

अनय विराग जैन

अनुज्ञा आशीष जैन

आत्मन अभय जैन

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

YOUR MIND IS LIKE A FACTORY.
THE INGREDIENTS YOU ARE PUTTING
INTO IT WILL BE USED TO MAKE THE
FINAL PRODUCT - YOUR LIFE.
@successpictures
MEDIA, DRAMA
NEGATIVITY,
GOSSIP

Don't compare yourself
with others. Everyone has
their own role to play.
@successpictures

YOUR CURRENT BEHAVIOR WILL BE
REFLECTED IN YOUR FUTURE LIFE
@successpictures

MAKE SURE THAT WHAT
YOU CHASE IN LIFE IS
WORTH DYING FOR
@successpictures

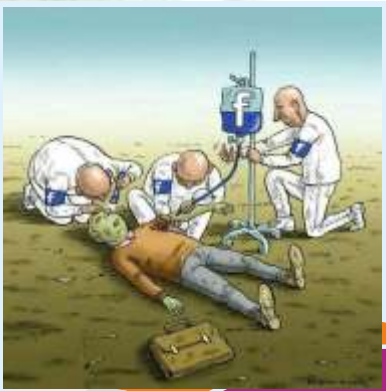

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक

- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन – डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका

संरक्षक

- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/ श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :

- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता

1	सूची	1
2	आओ जाने तीर्थंकर के चिन्हों को गीत से	2
3	संपादकीय	3-4
4	हमारे जैन स्वतंत्रता सेनानी-अंगूरी देवी	5
5	अमर शहीद - मोतीचंद जी शाह	6
6	पंडित अर्जुनलाल सेठी	7
7	प्रेरक प्रसंग - सटीक निर्णय	8
8	कविता - अच्छे काम, सच्चा पुरुषार्थ	9
9	अब नहीं करुँगा	10-11
10	प्रेरणा प्रसंग - ऐसी हो समाधि	12
11	प्रेरणा की मिसाल - कपूरीबाई जैन	13
12	जैसा नाम वैसा काम -हिम्मतभाई शाह	14
13	जीवटता का दर्पण - वरजू जैन दलीचंद जी हथाया	15
14	हमारी विरासत हमारे तीर्थ-पानीवत्तम	16
15	फैशन के दौर में भारतीय संस्कृति.....	17-18
16	हिन्दू रामायण और जैन रामायण	19-20
17	प्रसिद्ध विश्व विख्यात मुस्लिम लेखिका	21-22
18	जिनशासन की प्रभावना	23-24
19	सही सोच/लाल किला या जैन मंदिर	25
20	समाचार	26-28
21	बाल संस्कार शिविर देवलाली कार्यक्रमों की झलकियाँ	29
22	विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ	30
23	बाजार की बर्फ	31
24	कर्म प्रधान विश्व करि.....	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था : स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर
सदस्यता शुल्क -500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700
PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं।

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

आओ जाने तीर्थंकर के चिन्हों को गीत से

श्री ऋषभनाथ का कहता बैल, छोड़ो चार गति की जेल।
अजितनाथ का कहता हाथी, जग में कोई नहीं साथी।
संभव जिन का कहता घोड़ा, जीवन है अपना ये थोड़ा।
अभिनंदन का कहता बंदर, कितनी कषाय भरी है अंदर।
सुमतिनाथ का कहता चकवा, धर्मी का जग में रुतवा।
पद्मप्रभ का लाल कमल, कभी किसी से करो न छल।
सुपार्श्वनाथ का कहे साथिया, काटो अब तुम कर्म घातिया।
चंद्रप्रभ का कहता चंद्रमा, सच्ची है जिनवाणी माँ।
पुष्पदंत कहता मगर, मोक्ष महल की चलो डगर।
शीतलनाथ का कहता कल्पवृक्ष, धर्म कर्म में हो जा दक्ष।
श्रेयांसनाथ का कहता गैंडा, कभी चलो न रस्ता टेढ़ा।
वासुपूज्य का कहता भैंसा, जैसी करनी फल हो वैसा।
विमलनाथ का कहता सूकर, बुरे काम तू कभी न कर।
अनंतनाथ का कहता सेही, बड़े पुण्य से मिली ये देही।
धर्मनाथ का कहता वज्रदण्ड, कभी न करना कोई घमंड।
शांतिनाथ का कहता हिरण, सत्य धर्म की रहो शरण।
कुन्थुनाथ का कहता बकरा, मोक्षमहल का पथ है उजला।
अरहनाथ का चिन्ह है मीन, दर्शन ज्ञान चरित्र हैं तीन।
मल्लिनाथ का कहता कलशा, मन बने निर्मल जल जैसा।
मुनिसुव्रत का कहता कछुआ, धर्म से जीवन सफल हुआ।
नमिनाथ का नील कमल, शुभ करनी का उत्तम फल।
नेमिनाथ का कहता शंख, ज्ञानी जन रहते निशंक।
पार्श्वनाथ का कहता सर्प, मिटाओ मन से सारे दर्प ।
महावीर का कहता शेर, चलो मोक्ष में करो न देर।

संपादकीय

अपने बच्चों को संस्कार का कवच दें वरना...

अभी कुछ दिन पूर्व यूट्यूब पर कॉलेज की एक स्टूडेन्ट के विचार सुन रहा था। वह कह रही थी कि हमें बचपन से अपने धर्म के बारे में कुछ नहीं बताया गया, न ही धर्म को जानने समझने के लिये कभी प्रेरणा दी गई। जब हम बड़े हुये तो किसी ने हमारे धर्म के बारे में पूछा तो हम कुछ नहीं बता पाये तो उन्होंने अपने मुस्लिम धर्म के बारे में तर्क से समझाना शुरु कर दिया, वह हमें अच्छा और सही लगा। अब यदि युवा मुस्लिम धर्म को अपना लें तो इसमें हमारी कोई गल्ती नहीं है, सारी गल्ती हमारे माता-पिता की है। उसका यह विचार सुनकर लगा कि इस लड़की की बातों में बहुत सच्चाई है यदि हमारी युवा पीढ़ी धर्म से अनजान है तो इसमें दोष किसका ?

देश के अनेक नगरों से आ रहे समाचारों से एक बार फिर सोचने पर मजबूर कर दिया है। दमोह में गंगा जमुना के नाम से स्कूल चला रहे मुस्लिम व्यक्तियों ने जैन समाज की किशोर को मुस्लिम बना दिया, गाजियाबाद के एक संपन्न जैन परिवार का 17 साल का लड़का घर से छिपाकर पाँच बार नमाज करने लगा, भोपाल के एक जैन युवा सौरभ ने मुस्लिम सम्प्रदाय अपना लिया और उनके लिये प्रचार करने वाला सलीम नाम का मौलवी बन गया, जबलपुर की एक सम्पन्न परिवार की बेटी ने अपने परिवार की मर्जी के खिलाफ मुस्लिम लड़के से विवाह किया तो उसके परिवार ने उसे परिवार के लिये मरा घोषित कर उसके कार्ड छपवाकर उसका श्राद्ध कर दिया, मुम्बई की श्रद्धा वाल्कर को मारकर उसके 35 टुकड़े करने वाला उसका प्रेमी आफताब पूनावाला जिसे भयानक हत्याकांड का कोई दुख नहीं था। यदि सारी घटनाओं का उल्लेख किया जाये तो यह पूरा अंक भी कम पड़ जायेगा। प्रश्न यह है कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है

इसका एक मात्र कारण यह कि हम अपने परिवारों के बच्चों को जैन धर्म की अपार महिमा और मनुष्य पर्याय की दुर्लभता नहीं बता पाये। आज धर्म के नाम पर दर्शन, पूजा, विधान, शांतिधारा, लौकिक कार्यक्रम किये जा रहे हैं परन्तु जिनधर्म का स्वरूप क्या है यह नहीं बताया जा रहा। बड़े और प्रभावशाली संत और पण्डित अपने प्रवचन में सात तत्व, छःद्रव्य, विश्व की अनादि अनंतता, जीव का अकर्तावाद, सर्वज्ञ का स्वरूप, देव-शास्त्र-गुरू की महिमा न बताकर मात्र कामना पूर्ति का मिथ्या रास्ता बता रहे हैं। परम निर्दोष भक्तामर को रोग दूर करने वाला महामंत्र बताया जा रहा है, शांतिधारा से सर्वकामना पूर्ति का कार्य बताया जा रहा है, जिनमंदिरों में चढ़ाये जाने वाले चावलों से मोक्ष मिलेगा, जैसे अनेक सांसारिक प्रयोजनों में फंसाया जा रहा है। धर्म क्रिया के नाम पर मंदिर निर्माण,

पंचकल्याणक और विधान, चातुर्मास स्थापना और जन्मजयंती जैसे आयोजनों में समाज के अरबों रुपये पानी की तरह बहाये जा रहे हैं और पाठशालाओं के संचालन के लिये न कोई योजना है न कोई भावना। आश्चर्य की बात है कि रात्रिभोजन न करने वाले लड़के और लड़कियों के विवाह मुश्किल से हो रहे हैं मानो उन्होंने जैनाचार का पालन कर बहुत बड़ा अपराध कर दिया हो। उनके माता-पिता भी बेशर्म होकर कहते हैं कि मेरी बेटी को तो आलू-प्याज के बिना भोजन ही अच्छा हीं लगता, रात्रि भोजन तो वो करेगी ही, होटल में तो आजकल सब जाते हैं। यह लिखते हुये शर्म आ रही है आज के जैन युवा शराब और मांसाहार भी करने लगे हैं। फिर समाज में ऐसी घटनायें हों तो कोई आश्चर्य नहीं है।

जब अभिभावक स्वयं ही जिनधर्म के सिद्धांतों से परिचित नहीं होंगे तो बच्चों को संस्कार देने का प्रश्न करना उचित नहीं है। पिछले दिनों एक लगभग 60 वर्षीय जैन साधर्मी से पहली बार मुलाकात हुई तो कहने लगे कि मैं आचार्य ... का बहुत बड़ा भक्त हूँ। मुझे धर्म के नाम पर णमोकार मंत्र का अर्थ भी नहीं आता, रोज मंदिर जाकर भगवान से कह देता हूँ, मेरी सारी गल्तियाँ क्षमा करना। यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि समाज की बहुत दयनीय स्थिति है। यहाँ तक कि समाज के अध्यक्ष, मंत्री, ट्रस्टी जैसे जिम्मेदारी वाले पदों पर बैठे व्यक्तियों को सात तत्व, छह द्रव्य, आठ कर्म के नाम नहीं आते। यहाँ एक विशेष मुनिराज का चरण सेवक कहने वाले को मुनिराजों वे 28 मूलगुण और नवधा भक्ति के नाम तक नहीं पता।

यदि हम अपने बच्चों के भविष्य के साथ अपना भविष्य सुरक्षित करना चाहते हैं तो हमें पाठशालाओं पर विशेष ध्यान देना होगा। यदि किसी नगर में पाठशाला की व्यवस्था नहीं है तो ऑनलाइन आने वाली पाठशालाओं से जुड़कर अपने महान जैन धर्म को समझना होगा ताकि भविष्य में कोई शकील, सलीम, रमीज, इमरान या शकीला, अफरोज, शबनम हमारे परिवार की बेटियों को गुमराह न कर सकें।

छिन्दवाड़ा में हुये बाल शिविर में पधारीं सिविल कोर्ट की जज श्रीमति प्रेरणा जैन ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि आप घर से बाहर रहकर किसी बड़े पद के लिये पढ़ाई कर रहे हैं तो आपको मजबूत बनकर जाना होगा। कॉलेज जीवन में हर कदम पर ऐसे साथी मिलेंगे जो आपको हर तरह से भ्रष्ट करने का प्रयास करेंगे। मेरे जीवन में भी ऐसे कई अवसर जाये जब मेरे ही साथियों ने मेरे धार्मिक आचरण का उपहास किया परन्तु आज मैं सुरक्षित हूँ तो उसका एक मात्र कारण बचपन की पाठशाला और परिवार का धार्मिक वातावरण है।

भगवान महावीर के मोक्षगमन के बाद केवली, श्रुतकेवलियों, अनेक दिगम्बर आचार्यों, मुनिराजों, सैकड़ों विद्वानों और जागरुक साधर्मियों के समर्पण और त्याग ने जिनधर्म हम तक पहुँचाया है यदि हम यह आगे आने वाली पीढ़ी को यह धर्म की विरासत नहीं सौंप सके तो अक्षम्य अपराध होगा और हमारे पास सिवाय पछताने के कुछ नहीं होगा।

- विराग शास्त्री

हमारे जैन स्वतंत्रता सेनानी

श्रीमती अंगूरी देवी जैन

देश हित में आजादी के लिये अपने जीवन का सारा सुख वैभव छोड़ने वाली श्रीमति अंगूरी देवी जैन का जन्म 19 जनवरी 1910 को उत्तरप्रदेश के कासगंज में हुआ। इनका विवाह 1922 में महान देशभक्त तथा हिन्दी के सेवक महेन्द्रजी के साथ हुआ। उन दिनों देश में स्त्री शिक्षा की बहुत कमी थी और पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियाँ बहुत बढ़ गईं थीं। इनके पति ने इन्हें पढ़ाया और स्वतंत्रता संग्राम में अपने साथ शामिल कर लिया। 1930 में गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन में अनेक महिलाओं को पर्दे से बाहर निकालकर स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल किया और उनका नेतृत्व किया। उन्हें आगरा जिले का चौथा डिक्टेटर नियुक्त किया गया।

नमक सत्याग्रह आंदोलन में आपने को कोतवाली पर धरना दिया, पुलिस की मार के कारण उन्हें काफी चोटें आईं, छह माह की सजा और जुर्माना भी हुआ। एक बार सैनिक प्रेस की छत से सैकड़ों भाई-बहिनों के बीच भाषण दिया, फिर पुलिस लाठी चार्ज हुआ और उनके साथ उनकी बड़ी बेटी पद्मा को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस के द्वारा डंडे मारे जाने पर भी वे इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगातीं रहीं। उस समय वे गर्भवती थीं, फिर भी उन्होने छह माह की सख्त सजा सहन की।

1946-47 के बीच पति के जेल जाने पर उनके निर्देश पर अनेक स्वतंत्रता आंदोलन के कार्यकर्ताओं की सहायता की और सभी जागरुक किया। उनका मानना था कि व्यक्तिगत कल्याण के लिये धर्म का पालन जरूरी है और धर्म को सुरक्षित रखने के लिये देश की रक्षा जरूरी है।

ऐसी महान देशभक्त को नमन।

आपका संबल हमारा प्रयास

हमारी निम्न योजनाओं में सहयोग प्रदान कर जिनशासन प्रभावना में सहयोगी बनें ।

शिरोमणि परम संरक्षक	1,00,000/- रु.
परम संरक्षक	51,000/- रु.
संरक्षक	31,000/- रु.
परम सहायक	21,000/- रु.
सहायक	11,000/- रु.
सहायक सदस्य	5,000/- रु.
सदस्य	1,000/- रु.

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट अथवा चैक बनाकर प्रेषित करें अथवा आप **''चहकती चेतना''** के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं ।

PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं ।

अमर शहीद मोतीचंदजी शाह

अमर शहीद मोतीचंदजी शाह का जन्म 1880 में सोलापुर जिले के करकल गांव में हुआ। बचपन में ही पिता की मृत्यु हो जाने से चौथी कक्षा के बाद परिवार के लिये मजदूरी करने लगे साथ ही व्यक्तिगत अध्ययन भी करते रहे। उन्हें देशभक्तों के चरित्र पढ़ने, व्यायाम, तैराकी, लाठी चलाने का बहुत शौक था। वे अपने मित्र देवचंदजी के साथ स्वदेशी आंदोलन में जाने लगे यहीं से उन्हें देश के लिये समर्पण करने का भाव आया। उन्होंने अनेक स्थानों पर बालकों के संगठनों की स्थापना की। वे विद्यार्थियों के बीच जाकर विदेशी वस्त्रों का प्रयोग नहीं करना, विदेशी शक्कर नहीं खाना जैसी प्रतिज्ञायें दिलाते थे।

जैन कुल में जन्म लेने के कारण उनमें जैन धर्म के गहरे संस्कार थे। ब्रह्मचर्य को उत्तम साधना मानकर उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया। एक बार स्वाधीनता आंदोलन में उन्हें पकड़कर जेल भेज दिया गया। जेल में दशलक्षण पर्व के दस उपवास किये। अन्य साथियों के द्वारा इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि धार्मिक व्रत आत्म शुद्धि और परिषह सहने की तैयारी है, साथ ही राष्ट्र की सेवा के लिये भी कठोर साधना का अभ्यास जरूरी है। एक बार जयपुर में इनके द्वारा संगठित क्रांतिकारी दल की बैठक की गई, इसकी सूचना पुलिस को मिल गई। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करके कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने इन्हें फांसी की सजा सुनाई।

जेल में अपने अंतिम दिनों में उन्होंने अपने खून से अपने मित्रों को देश के लिये समर्पण करने के लिये एक पत्र लिखा। उनकी अंतिम इच्छा थी कि उन्हें फांसी से पहले जिनेन्द्र भगवान के दर्शन कराये जायें और दिगम्बर अवस्था में नग्न ही फांसी दी जाये। जेल के नियमों के कारण यह संभव नहीं हुआ, परन्तु उनके एक साथी ने प्रातः 4 बजे ही भगवान पार्श्वनाथ की फोटो के दर्शन करा दिये और उन्होंने सामायिक पाठ, तत्वार्थ सूत्र और समाधिमरण पाठ भी किया ।

फांसी की सजा सुनकर भी उन्हें कोई चिंता नहीं थी । जेल के रिकार्ड के अनुसार फांसी के पहले उनका वजन भी बढ़ गया था। फांसी को रस्सी को उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया।

इनकी शहीद होने का समाचार सुनकर मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध क्रांतिकारी पण्डित अर्जुनलाल सेठी को बहुत दुख हुआ। उन्होंने अपनी बेटी का विवाह महाराष्ट्र के एक युवक से इसलिये कर दिया कि "जिस प्रान्त के सपूत ने देश के लिये बलिदान दिया उस प्रांत को अपनी कन्या अर्पण कर दूँ। हो सकता है कि उससे कोई मोती जैसा पुत्र रत्न उत्पन्न होकर देश की सेवा कर सके।"

पंडित अर्जुनलाल सेठी

क्रान्तिकारी देशभक्त और समाजसेवी विद्वान पंडित अर्जुनलाल सेठी का जन्म 9 सितम्बर 1880 को हुआ। इनके दादा श्री भवानीदास सेठी की अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के पुत्रों से अच्छी मित्रता थी। सेठीजी ने बचपन से ही लोकसेवा के कार्य, सभाओं में व्याख्यान, नाटकों में भाग आदि लेते थे। 1904 में सेठीजी दिगम्बर जैन महासभा द्वारा संचालित मथुरा विद्यालय में शिक्षक हो गये। 1907 में सेठी जी ने जयपुर में जैन विद्यालय की स्थापना की जो कि वास्तव में क्रान्तिकारियों को पैदा करने का विद्यालय था। 1905 से 1912 तक सेठीजी ने सभी क्रान्तिकारी आंदोलनों में भाग लिया। देशहित में लगे रहने के कारण वे 24 घंटे में से मात्र 2 घंटे सोते थे।

1914 में सेठीजी को जयपुर में नजरबंद किया गया। बाद में मद्रास प्रेसीडेन्सी के बैलूर जेल में भेज दिया, जहाँ जिनदर्शन न होने पर लगभग 50 दिन तक भोजन नहीं किया, आखिर अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा और स्वतंत्रता सेनानी महात्मा भगवानदीन ने जेल में जिनप्रतिमा विराजमान करवाई और तब सेठीजी का उपवास समाप्त हुआ।

1915 में अम्बाला में जैन मंदिर की वेदी प्रतिष्ठा में बाबू अजितप्रकाश ने सेठीजी के आर्थिक सहयोग के लिये अपील की और सेठीजी को जेल से छोड़ने का आंदोलन तेज हुआ और सरकार उन्हें शर्तों पर जेल से छोड़ने पर राजी हो गई परन्तु सेठीजी ने कोई भी शर्त मानने से मना कर दिया। 1920 में छह वर्ष की जेल से छूटने के बाद बम्बई जाते समय स्टेशन पर बाल गंगाधर तिलक ने अभूतपूर्व स्वागत किया।

5 जुलाई 1934 में महात्मा गांधी अजमेर में सेठीजी के घर गये। कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में सेठीजी के नेतृत्व में लोग सत्याग्रह पर बैठ गये। सेठीजी को पुलिस ने लाठियों ने मारकर घायल कर दिया तब उन्हें देखने महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू जैसे अनेक बड़े नेता उनके घर गये। इस घटना से दुखी होकर सेठीजी ने उपवास करना चाहा परन्तु गांधी के समझाने पर वे मान गये। गांधीजी ने कहा आप धर्मशास्त्र के ज्ञान में मेरे गुरु तुल्य हैं।

सेठीजी बहुत उदार हृदय के थे, जो उनके पास आता था वह उसे जरूरतमंदों में बांट देते थे। जीवन के अंत में उनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई तब मजबूरी में वे 30 रुपये प्रतिमाह में अजमेर में मुस्लिम बच्चों को पढ़ाने लगे।

22 दिसम्बर 1941 को उनका निधन हो गया। सम्पूर्ण जैन समाज को अपने समाज के इस महापुरुष पर गर्व है।

प्रेरक प्रसंग

सटीक निर्णय

सागर शहर में एक युवा को लकड़ी की आवश्यकता हुई तो लकड़ी लेने वह बाजार की ओर बढ़ा तो देखा कि बूढ़ा व्यक्ति बैलगाड़ी में लकड़ियाँ लादकर आ रहा है। लकड़ी का मूल्य तय कर उस युवा ने पूरी गाड़ी अपने घर पर खाली करवा ली। तभी उस युवा की धर्ममाता वहाँ आ गईं तो लकड़ी का मूल्य जानकर बोलीं - पुत्र! लकड़ी का मूल्य अधिक लगता है। इस गाड़ी वाले ने तुम्हें फंसा लिया है। माता के वचन सुनकर युवा मन ही मन बूढ़े पर नाराज हुआ उसे यह सौदा तोड़ने का विचार किया परन्तु बूढ़े से स्पष्ट न कहते हुये बहाना बनाकर बोला बाबा! ये लकड़ियाँ बहुत मोटीं हैं। इनके छोटे-छोटे टुकड़े कर दो नहीं तो वापस ले जाओ। बूढ़े ने विचार किया - अब लकड़ियाँ उतार दीं हैं, अब इन्हें फिर से गाड़ी पर चढ़ाना और कहीं और ले जाकर बेचना तो बहुत परेशानी वाला काम है। इससे तो अच्छा है कि लकड़ी के यहीं टुकड़े कर दूँ। उसने कुल्हाड़ी लेकर बहुत मेहनत से छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये। उसका पूरा शरीर पसीने से गीला हो गया। वह केवल लकड़ी के पैसे लेकर वहाँ से चला गया।

बाद में युवा विचार करने लगा कि गलती तो मेरी ही है। मैंने स्वयं ही मूल्य निश्चित किया था और लकड़ी काटने की बात तो की ही नहीं थी। मैंने उसे बूढ़े को व्यर्थ ही परेशान किया। युवा अपने को अपराधी महसूस करने लगा। वह धूप में नंगे पांव धूप में ही बूढ़े की तलाश में भागने लगा। थोड़ी दूरी पर उसे बैलगाड़ी जाती हुई दिखाई दी। उसने जाकर उसे रोका और बूढ़े से कहा - बाबा मैंने आपको बहुत तकलीफ दी। मुझे क्षमा कीजिये - यह कहते हुये उसने बूढ़े को लकड़ी काटने की मजदूरी, भोजन और मिठ्ठाई दी। यह देखकर वह बूढ़ा आश्चर्यचकित रह गया।

वह युवा व्यक्तित्व थे - बुन्देलखण्ड में अनेक गुरुकुलों की स्थापना करने वाले श्री गणेश प्रसाद वर्णी।

अच्छे काम

हम सब भी कुछ काम करेंगे।
अच्छे -अच्छे काम करेंगे।।

नहीं अधिक आराम करेंगे।
खेल खेलते काम करेंगे।।
नहीं व्यर्थ ही हम बोलेंगे।
नहीं व्यर्थ ही हम डोलेंगे।।

सबका काम बनायेंगे।
सबको गले लगायेंगे।।
पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे।
लालच में नहीं आयेंगे।।

ऊधम नहीं मचायेंगे।
कूड़ा नहीं फैलायेंगे।।
किसी को नहीं चिढ़ायेंगे।
किसी को नहीं रुलायेंगे।

धोखे में नहीं आयेंगे।
भय को दूर भगायेंगे।।
आत्मविश्वास जगायेंगे।
उन्नत देश बनायेंगे।।

- ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन्

सच्चा पुरुषार्थ

फणीश्वर नामक नगर में राजा प्रजापाल राज्य करते थे। इसी नगर में सागरदत्त सेठ अपनी पणिका नाम की पत्नी के साथ सुखपूर्वक रह रहे थे। उनके एक पणिक नाम का पुत्र था जो कि अत्यंत शांत, सरल और पवित्र हृदय का था।

एक दिन नगर में भगवान महावीर का समवशरण आया तो पणिक भगवान के दर्शन करने समशरण में गया तो उसने भगवान महावीर अद्भुत रूप देखा तो उसका मन बहुत प्रसन्न हो गया। उसने भगवान की स्तुति, पूजन आदि की और भगवान की दिव्यध्वनि को सुना और उसे सहज प्रश्न हुआ कि हे भगवान! मेरी आयु कितनी है ? भगवान की वाणी में आया कि पणिक की आयु कुछ ही दिन शेष हैं तो उसे संसार से वैराग्य हो गया और समवशरण में ही मुनि दीक्षा ले ली।

दीक्षा लेकर पणिक मुनिराज अनेक नगरों में विहार करते हुये गंगा नदी के किनारे आये और गंगा नदी को पार करने के लिये नाव में बैठे। नाव चल ही रही थी कि अचानक भयंकर आंधी आ गई और नाव डगमगाने लगी, उसमें पानी भर गया। नाव डूबने ही वाली थी कि पणिक मुनिराज ने वहीं ध्यान लगा लिया और आत्मसाधना के बल पर केवलज्ञान की प्राप्ति की और मोक्ष की प्राप्ति की।

साभार - लघु बोध कथायें - ब्र. रवीन्द्रजी आत्मन्

अब नहीं करुँगा

अरे भाई ! आम क्या भाव दिये ?

जी साब ! 100 रुपये किलो ।

(आश्चर्य से) 100 रु. किलो.... लूट मचा रखी है क्या?

आम का भाव 70/- रुपये किलो तो चल रहा है ।

अरे साब ! आप कैसी बातें कर रहे हैं ? पूरे बाजार में 70/- रुपये किलो आम नहीं मिलेगा । आप एक काम करिये, 5/- रुपये कम दे देना ।

क्या बात करते हो? मैंने दो दुकान में पता किया है ।

(पत्नी ने धीरे से पूछा) आपने कहाँ पता किया ? हम तो सीधे घर से आ रहे हैं ।

तुम चुप रहो ! ऐसे ही माल भाव किया जाता है ।

देखो भाई ! 70/- से एक रुपये ऊपर नहीं दूँगा ।

नहीं साब ! इतने में मैंने खरीदा भी नहीं । क्यों गरीब आदमी को परेशान कर रहे हैं। एक काम करिये, आप 90/- रुपये दे देना ।

नहीं भाई ! मैंने जो कह दिया सो कह दिया । 70/- रुपये से ज्यादा नहीं । वैसे भी तुम्हारे आम ज्यादा अच्छे नहीं है ।

क्या बात करते हो साब ! इतने अच्छे आम हैं । आज ही माल उतरा है और आप कह रहे हैं कि आम अच्छे नहीं है । पता नहीं आप लोगों को हम गरीबों की न मेहनत दिखती है, न हमारी परेशानी ।

इसमें क्या मेहनत भाई ! सीधा माल आया और बेच दिया और मेहनत तो सब करते हैं । हमारा पैसा क्या बिना मेहनत का है... जो ऐसे ही लुटाते फिरें... ।

मैंने आपसे कौन से हजारों रुपये मांग लिये? बस अपनी मेहनत का ही तो मांग रहा हूँ और आपके लिये यह कहना आसान है कि माल सीधा आया और बेच दिया । सुबह 4 बजे मंडी

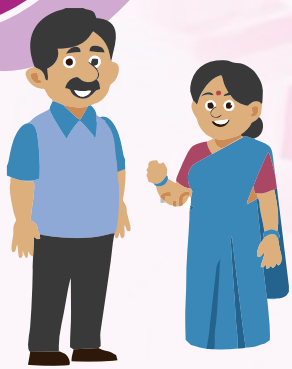

जाकर माल लाना, वहाँ से दुकान तक माल लाना और पुलिस वाले मिल जायें तो उनको रिश्वत देना । कई बार तो पुलिस वाले 2-5 किलो आम उठा ले जाते हैं और पैसा भी नहीं देते ।

तो तुमको पैसा मांगने चाहिये....

अरे साब ! पुलिस की मार खाना है क्या ? उनको तो रुपये देना ही पड़ता है और इतनी गर्मी में सुबह से लेकर शाम तक ठेले पर आम बेचना आसान है क्या ? और जिस दिन किसी कारण से दुकान नहीं खोल पाये तो उस दिन कमाई भी नहीं होती और आम खराब हुये, वह नुकसान अलग ।

तुम बहाने अच्छे बना लेते हो ।

इसमें बहाने की क्या बात है ? (पत्नी ने बीच में टोकते हुये कहा) सच ही तो कह रहा है ये । आप मात्र 20 रुपये बचाने के लिये उससे बहस कर रहे हैं जबकि आपने झूठ कहा कि आप दो दुकान में पहले भाव पता करके आये हैं । जबकि पूरे बाजार में यही भाव आम मिल रहे हैं बल्कि कुछ दुकानों में इससे भी अधिक भाव है ।

लेकिन रुपये भी बचाना चाहिये ।

किसी को तकलीफ पहुँचाकर रुपये बचा लिये तो क्या कमाल कर लिया? ऐसे रुपये बचाना भी किस काम का, जो किसी को दुख पहुँचाकर बचाये गये हैं और इतना ही रुपये बचाने का शौक है तो आम खाना बंद कर दीजिये ।

तुम तो बड़ी पंडिताइन बन गई हो ।

इसमें पंडिताइन की क्या बात है? क्या आप डॉक्टर के यहाँ, मेडिकल में, बच्चों की फीस में कभी मोल भाव करते हैं ? अभी परसों ही जब आप डॉक्टर के यहाँ गये तो इलाज करने के पहले ही 2000 रु. फीस जमा करवा ली, तब आपने मोल भाव क्यों नहीं किया ?

अच्छा पंडिताइन ! समझ गया ।

आपका दिल दुखाना मुझे अच्छा नहीं लगता परंतु एक गरीब आदमी अपनी मेहनत का पैसा मांग रहा है तो उसे प्रेम से देना चाहिये और केवल आम वाले को ही नहीं, बल्कि रिक्शावाला, कुली, लेबर जैसे लोगों को उनकी पूरी मजदूरी देना चाहिये । यह भी सहयोग की भावना ही है ।

अरे देवीजी ! समझ गया । भाई ! दो किलो आम तौल दो और ये लो तुम्हारे 180 रुपये ।

धन्यवाद साब । (आम वाला हाथ जोड़कर बोला ।)

और 20 रुपये भी और रख लो । धन्यवाद तो मेरी पत्नी को दो, जो इतने अच्छे विचार रखती हैं ।

आप भी न, मजाक करते हो । (पत्नी ने मुंह छुपाते हुये कहा ।)

न, मजाक नहीं, सच है ये और आज से ये नियम लिया कि आगे से फालतू में मोलभाव नहीं करुँगा । मेहनत का पूरा पैसा दूँगा ।

ऐसी हो समाधि

बुन्देलखण्ड के महापुरुष श्री गणेश प्रसादजी वर्णी की माँ चिरोंजा बाई बहुत धार्मिक महिला थीं।बाईजी को मृत्यु के तीन माह पूर्व ही देह छूटने का आभास हो गया था। शरीर भी कमजोर हो रहा था। वर्णीजी ने डॉक्टर दिखाने का आग्रह किया तो बाईजी ने मना किया और कहा कि अब मुझे कोई दवा नहीं लेना, बस तत्वज्ञान की औषधि लेना है। जब मंदिर जाने की भी शक्ति नहीं रही तो वर्णीजी ने एक ठेला बनवा लिया और उसी में लेटकर जिनमंदिर जातीं थीं। शरीर कमजोर होते रहने से वह भी छूट गया तो वे घर पर ही जिनभक्ति, पूजन-स्वाध्याय करने लगीं।

सांस के रोग के कारण वे एक तकिये के सहारे चौबीस घंटे बैठीं रहतीं थीं। भयंकर तकलीफ होने पर भी वे कभी दर्द की चर्चा नहीं करतीं थीं और हर समय तत्व चिंतन करतीं रहतीं थीं।

सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी अविनाशी मैं आत्मस्वरूप। देह मरे पर मैं नहीं मरता अजर अमर मैं आत्मस्वरूप।।

जब आयु के दस दिन शेष रहे तो तब बाईजी ने वर्णीजी को बुलाकर कहा - हमने तुम्हें चालीस साल पाला। इस लम्बे समय में हमसे यदि कोई किसी भी प्रकार का अपराध हुआ हो तो मुझे क्षमा करना। यह सुनकर वर्णी जी रोने लगे तो बाईजी ने उन्हें कमरे से बाहर भेज दिया और साफ कह दिया कि मैं समाधि का आनंद लेते हुये देह परिवर्तन करना है। यदि मुझसे मिलने वालों को रोना है तो मुझसे मिलने न आयें।

दो दिन शेष रहने पर दलिया खाना भी छोड़ दिया और केवल एक बार पानी लेने लगीं। मृत्यु वाले दिन पानी भी छोड़ दिया। रात्रि में 9 बजे लोगों ने देखा कि बाईजी का अंतिम समय आ गया है। तब बाईजी ने कहा अब हमको बिठा दो। बाईजी ने दोनों हाथ जोड़े और णमो सिद्धाणं और वंदित्तु सव्व सिद्धे कहकर प्राण त्याग दिये। मानो उन्होंने सिद्धों से मिलने की तैयारी कर ली हो।

प्रेरणा की मिसाल हैं जिनधर्म की आराधिका

श्रीमति कपूरीबाई जैन

97 वर्ष की उम्र, हिम्मत बेमिसाल, हर समय आत्म चिन्तन और स्वाध्याय में लीनता, प्रतिदिन जिनदर्शन का नियम - ये सब विशेषतायें मध्यप्रदेश के दमोह नगर में रहने वालीं श्रीमति कपूरी बाई जैन।

उम्र के इस पड़ाव पर भी उनका हौसला कहीं कम नहीं दिखाई देता। प्रारंभ से जिनधर्म में आस्था रखने वालीं श्रीमति कपूरी बाई का मात्र 16 वर्ष में विवाह हो गया। विवाह के बाद दमोह आकर अध्यात्म रसिक स्व. पण्डित भगवानदासजी के आध्यात्मिक समागम का लाभ मिला और उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर प्रारंभ से ही निरंतर षट आवश्यक का पालन करतीं हैं। आपके परिवार के द्वारा अनेक जिनालयों में जिनप्रतिमाओं की स्थापना की गई है। जिनदर्शन के बिना भोजन ग्रहण न करने वालीं कपूरीबाई प्रतिदिन विगत लगभग 20 वर्षों से मात्र 1 समय भोजन करतीं हैं। वे हमेशा प्रसन्नचित्त रहकर अपने परिवार को जिनधर्म के संस्कारों से सिंचित करतीं रहतीं हैं। 12 मई को दमोह में उनसे मुलाकात के समय उनसे पूछा कि इस पर्याय के बाद अब कौन सी पर्याय में जाना चाहेंगी तो हंसते हुये बोलीं - अब कोई पर्याय नहीं चाहिये, बस अब मोक्ष में जाना है।

भावना इतनी पवित्र है कि पर्याय की अस्थिरता जानकर दमोह में बनने वाले नवीन मंदिर के शिलान्यास के पूर्व ही मंदिर निर्माण के लिये अपना स्वर्ण पहले से ही दान कर दिया।

पवित्र भावना वालीं श्रीमति कपूरी बाई दीर्घायु और स्वस्थ रहकर जिनधर्म की प्रभावना की प्रेरणा का दीप बनीं रहें - ऐसी मंगल भावना।

जैसा नाम वैसा काम

हिम्मतभाई शाह

ये हैं मुम्बई निवासी 94 वर्ष के श्री हिम्मतभाई हरिलाल शाह। जन्म हुआ गुजरात के सांवरकुण्डला गांव में। श्वेताम्बर सम्प्रदाय में जन्मे श्री हिम्मतभाई पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचनों के आधार पर प्रकाशित आत्मधर्म पत्रिका को पढ़कर सत्य धर्म से प्रभावित होकर 1952 में 23 वर्ष की उम्र में दिगम्बर धर्म स्वीकार कर लिया। उस समय सामाजिक व्यवस्था के कारण श्वेताम्बर धर्म छोड़ना बहुत कठिन था। परन्तु हिम्मतभाई घबराये नहीं और सामाजिक बहिष्कार की आशंका के बाद भी अपने निर्णय पर अडिग रहे। उसके बाद गुरूदेवश्री के प्रवचनों को निरंतर सुनने लगे और उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि सच्चा धर्म तो दिगम्बर जैन धर्म है। वे 1966 में मुम्बई के दादर उपनगर में आ गये और व्यापार से समय निकालकर निरंतर प्रक्षाल, पूजन, स्वाध्याय आदि गतिविधियों में संलग्न रहने लगे।1990 में देवलाली के कहान नगर में एक बंगला ले लिया और समय समय पर वहाँ रहकर आत्म कल्याण में लगे रहे। सन् 2002 में व्यापार से निवृत्ति लेकर अपने जीवन को पूरी तरह से जिनधर्म की आराधना में समर्पित कर दिया। वर्तमान में प्रतिदिन कम से कम 6 से 8 घंटे पूजन, स्वाध्याय गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। श्री हिम्मतभाई का पूरा परिवार भी तत्वज्ञान की धारा में तन-मन-धन से समर्पित है।

हमेशा शांत और प्रसन्न रहने वाले श्री हिम्मतभाई अपने स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहते हैं और प्रतिदिन योग, प्राणायाम जैसे उपाय के साथ सात्विक भोजन करते हैं। श्री हिम्मतभाई की धर्मपत्नी श्रीमति कोकिलाबेन भी स्वयं स्वाध्याय आदि गतिविधियों में लीन रहते हुये श्री हिम्मतभाई के धार्मिक कार्यों में सहभागी रहतीं हैं। श्री हिम्मतभाई का पूरा परिवार पूर्ण समर्पण के जिनशासन प्रभावना में संलग्न है।

चहकती चेतना परिवार ऐसे सरल हृदयी और जिनशासन के प्रति समर्पित श्री हिम्मतभाई के स्वस्थ, दीर्घायु और अध्यात्ममय जीवन की मंगल कामना करता है।

जीवटता का दर्पण है-

श्रीमति वरजू जैन दलीचंदजी हथाया

उम्र 100 साल, चेहरे पर गजब का आत्मविश्वास, स्वयं का काम करने में सक्षम और जागरुक श्रावक की तरह सदैव जिनधर्म का आराधन - यह विशेषातायें हैं मुम्बई के ग्रांट रोड निवासी श्रीमति वरजू बेन हथाया की। अपनी उम्र का शतक (100 वर्ष) पूरी कर चुकीं वरजू बेन पूरे जैन समाज के लिये आदर्श हैं। 100 वर्ष की उम्र होने पर भी न तो उनका हौसला कमजोर दिखता है न अपने कर्तव्य की प्रति सजगता। प्रतिदिन प्रातः उठकर स्नान के बाद टीवी में आने वाली पूजन में भाग लेन, पंच परमेष्ठी का स्मरण और पिर स्वाध्याय करना। उसके बाद ही भोजन आदि ग्रहण करना। शारीरिक कमजोरी के कारण प्रतिदिन मंदिर जाने में असमर्थ वरजूबेन प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी को जिनमंदिर अवश्य जातीं हैं।

प्रारंभ से ही जिनधर्म के संस्कारों से संपन्न परिवार में जन्मी और राजस्थान के उदयपुर जिले के छोटे से गांव की निवासी वरजू बेन का विवाह छोटी उम्र में ही श्री दलीचंदजी से हो गया। बाद में पुत्रों के व्यवसाय के मुम्बई में स्थिर होने के कारण वे परिवार के साथ मुम्बई आ गईं। छह पुत्रों से भरे पूरे परिवार की मुखिया वरजू बेन का ही प्रभाव है कि उनका पूरा परिवार जिनधर्म की प्रभावना में समर्पित है। उनके बेटे-बहू, पोते पंचकल्याणक जैसे महान आयोजनों में सौधर्म इन्द्र श्री ब्रजलालजी-श्रीमति मधु बेन, माता-पिता श्री जवेरचंदजी श्रीमति केसर बेन, श्री अशोकजी, गीताजी, श्री हीरालालजी-ल कुबेर, इन्द्र आदि के रूप में सहभागिता कर चुके हैं, साथ ही देश में बनने अनेक जिनमंदिरों, स्वाध्याय भवनों और धार्मिक - सामाजिक गतिविधियों में उदार हृदय से योगदान देते हैं। पूरे परिवार की एकता भी कमाल की है। सभी पुत्रों पर समान रूप से स्नेह और अधिकार रखने वालीं वरजू बेन स्वेच्छा से सभी के घर रहने जातीं हैं। परिवार के सभी सदस्य अपने घर सबसे वरिष्ठ मुखिया की मन से सेवा करते हैं। वरजू बेन का वात्सल्य इतना है कि वे घर पर आने वाले मेहमानों और विशेषकर विद्वानों के प्रति बहुत प्रेम रखतीं हैं और हमेशा भोजन के लिये आग्रह करतीं हैं। धन्य हैं ऐसी माँ - जिनके संस्कारों की छत्रछाया में पूरा परिवार एक सूत्र में बंधकर जिनधर्म की सेवा में संलग्न हैं।

चहकती चेतना परिवार ऐसी स्नेहदात्री मातुश्री श्रीमति वरजूबेन के यशस्वी जीवन की मंगल कामना करता है।

हमारी विरासत हमारे तीर्थ

पानीवत्तम

आंध्रप्रदेश कुडप्पाह जिले के दावुलाप्पाडू गांव में खुदाई के दौरान एक पानीवत्तम प्राप्त हुआ। पानीवत्तम अर्थात् जो आकार में गोल है और एक ओर पानी के निकलने का स्थान है उस पानीवत्तम में तीर्थंकर भगवान की चौमुखी प्रतिमा प्राप्त हुई। इतिहासकारों के अनुसार यह दसवीं शताब्दी की है।

साथ ही यहाँ पेन्ना की नदी की रेत में खुदाई के दौरान एक विशाल जैन मंदिर के अवशेष प्राप्त हुये हैं। यह खुदाई 1950 में हुई थी। यह जिनमंदिर ईसा से लगभग 200 साल पहले का है। यहाँ चारदीवारी परिसर में एक जैन मंदिर के अवशेष और एक तीर्थंकर की 12 फुट ऊंची प्रतिमा प्राप्त हुई है।

यहाँ से प्राप्त लगभग 1200 साल पुराने राष्ट्रकूट काल के एक शिलालेख में लिखा है कि आंध्रप्रदेश में ईसा मसीह के समय से लेकर लगभग आङ्गवीं शती तक लगभग1000 साल तक जैन धर्म का बहुत प्रभाव रहा।

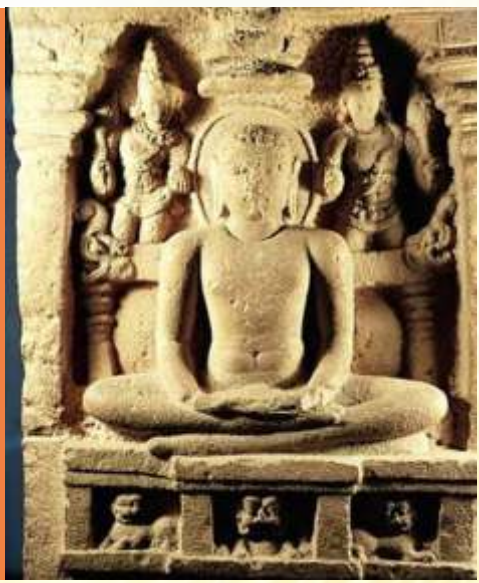

जन्मदिवस की शुभकामनायें

महाभाग जिन शासन पाया, नित इसका सत्कार करो।
ज्ञाता द्रष्टा रहो जगत में, वस्तु स्वरूप स्वीकार करो।
यही भाव है प्यारी एषणा, हर पल जिन वच ही ध्याना।
अशरीरी निज पद को ध्याकर, सिद्ध शिला को पा लेना।।

एषणा ज्ञाता सिंघई
सिवनी
24 सितम्बर

फैशन के दौर में भारतीय संस्कृति की गौरवशाली तस्वीर

आधुनिक पीढ़ी की युवा लड़कियाँ और बहुयें फैशन और सुविधा का तर्क देकर सलवार सूट, जींस, टॉप, टीशर्ट, स्लीवलेस कपड़े जैसे कपड़े पहनने लगीं हैं। सलवार सूट तक मर्यादा समझ आती है पर अगंप्रदर्शन करने वाले कपड़े पहनकर स्वयं को माडर्न सिद्ध करने वाली ये महिलायें भारतीय सभ्यता और संस्कृति का उपहार करतीं दिखतीं हैं। ऐसे विषम वातावरण में एक घटना ने समस्त भारतीयों को अपनी संस्कृति और सभ्यता पर गर्व करने का अवसर दे दिया।

घटना 29 मई को हुये भारत के सबसे प्रसिद्ध किक्रेट टूर्नामेन्ट आईपीएल के फाइनल मैच की है। यह फाइनल मैच गुजरात के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में चेन्नई और गुजरात के बीच हुआ। जब इस रोमांचक मैच में चेन्नई की ओर से बल्लेबाजी कर रहे रवीन्द्र जडेजा ने मैच की अंतिम बॉल पर विजयी शॉट लगाया तो पूरे स्टेडियम के साथ हर किक्रेट प्रेमी रवीन्द्र जडेजा के सम्मान में ताली बजाकर उसे धन्यवाद देने लगा। तभी रवीन्द्र जडेजा की धर्मपत्नी रीबाबा जडेजा मैदान पर भागती हुई आई और अपने पति रवीन्द्र जडेजा के विनयपूर्वक झुककर चरण स्पर्श किये और गले लगकर इस अविश्वसनीय जीत पर बधाई दी। करोड़ों लोगों के सामने अपने पति से गले मिलते हुये भी रीबाबा के चेहरे पर शालीनता और गजब की प्रसन्नता थी। इससे भी अधिक खुशी की

बात यह थी कि रीबाबा भारतीय परिधान साड़ी पहनकर और सर पर पल्लू डालकर मैदान में पहुँची। रीबाबा के इस दृश्य ने पश्चिमी कपड़ों की वकालत करने वालीं उन करोड़ों महिलाओं को सहज ही उत्तर दे दिया।

33 वर्ष की युवा रीबाबा कोई हिन्दी प्रान्त की ग्रामीण महिला नहीं बल्कि आधुनिक गुजरात के राजकोट में जन्मी हैं और गुजरात यूनिवर्सिटी इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है, इतना ही नहीं रीबाबा वर्तमान में जामनगर विधानसभा क्षेत्र की भाजपा विधायक हैं। मैदान पर साड़ी पहनकर अपने पति के चरणस्पर्श करने वालीं रीबाबा ने यह कोई प्रदर्शन नहीं किया बल्कि वे हमेशा सार्वजनिक स्थानों पर साड़ी ही पहनती हैं और उन्होंने अपने पूरे चुनाव प्रचार के दौरान साड़ी ही पहनी थी, यहाँ तक कि प्रधानमंत्री से मिलते समय भी पहनावा अत्यंत शालीन था। यह भी जानने योग्य है कि एशिया के सबसे धनी व्यक्ति मुकेश अंबानी की धर्मपत्नी नीता अंबानी ने भी हमेशा सार्वजनिक समारोहों में साड़ी ही पहनतीं हैं। संस्कारपूर्ण वातावरण में पलीं रीबाबा ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप आचरण करके पूरे विश्व को भारतीयता का संदेश दे दिया।

चहकती चेतना परिवार रीबाबा जडेजा और उनके परिवार की संस्कारों के प्रति धन्यवाद देता है।

जैनत्व का वैभव

तमिलनाडु के जिनकांची मठ के स्तंभ पर उकरी हुई यह आकृति जिनशासन की प्राचीनता और व्यापकता का उद्घोष करती है। यह शेर की आकृति भगवान महावीर के चिन्ह के माध्यम से जैन धर्म की विशालता को बता रही है। सम्राट अशोक ने मौर्य स्तंभ में इन शेरों को बनवाया था। हिन्दू इतिहासकारों ने इसे अशोक स्तंभ बताया है। अंतिम हिन्दू शासक सम्राट अशोक जैन सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र थे। अशोक को देवनप्रिय भी कहा जाता था। यह सम्राट अशोक का नाम नहीं बल्कि मौर्य शासकों को उपाधि दी गई थी।

हिन्दू रामायण और जैन रामायण के तथ्य

पूरे विश्व में लोग हिन्दू रामायण की घटनाओं, प्रसंगों और तथ्यों से परिचित हैं और जैन धर्म के अनुयायी भी हिन्दू रामायण के सारी बातों को सच मानते हैं जबकि जैन रामायण के कई तथ्य हिन्दू रामायण से मेल नहीं खाते। जैन रामायण जानने के दिगम्बर वीतरागी आचार्य जिनसेन द्वारा रचित पद्म पुराण को पढ़ना चाहिये जिसमें सत्य घटनाओं का वर्णन है। आइये जानते हैं कुछ विशेष अंतर को -

1. **हिन्दू मत** - रावण, कुंभकर्ण, मेघनाद आदि सभी राक्षस थे।
   जैन रामायण - ये सभी राक्षस वंश के थे और सभी विद्याधर थे। अनेक ऋद्धियों के स्वामी थे। इनके पास अपार वैभव, बल था।
2. **हिन्दू मत** - रावण शिवजी का परम भक्त था।
   जैन रामायण - रावण भगवान शांतिनाथ का परम भक्त था। उनकी भक्ति में लीन होकर उसने सितार बजाया था।
3. **हिन्दू मत** - रावण के दस सिर थे।
   जैन रामायण - किसी के दस सिर होना संभव नहीं है। एक बार जब बचपन में रावण खेल रहे थे तब रावण दस रत्न वाला एक हार पहना हुआ था और उस हार में रावण के 10 चेहरे दिखाई दे रहे थे। इसलिय रावण को दशानन (दस चेहरे वाला) कहा जाने लगा।
4. **हिन्दू मत** - रावण का वध राम ने किया।
   जैन रामायण - जैन मत के अनुसार त्रेसठ शलाका पुरुषों में राम बलभद्र, रावण प्रतिनारायण और लक्ष्मण नारायण थे। नियमानुसार प्रत्येक प्रतिनारायण का वध नारायण करता है और रावण का वध लक्ष्मण ने किया चूंकि राम सेना के प्रमुख थे इसलिये राम ने रावण को मारा, ऐसा कहा जाता है।

5. **हिन्दू मत** - हनुमान, सुग्रीव, बालि, अंगद आदि सैनिक वानर (बंदर) थे।

जैन रामायण - ये वानर नहीं बल्कि वानर वंश के थे और इनके सेना के ध्वज में बंदर का चिन्ह होता था परन्तु भ्रमवश लोग इन्हें बंदर के रूप में देखते हैं। हनुमान तो सर्वांग सुन्दर कामदेव थे और उसी भव से मोक्ष गये।

6. **हिन्दू मत** - बालि की हत्या सुग्रीव ने की।

जैन रामायण - सुग्रीव से विवाद होने के बाद बालि को अपनी भूल का एहसास हुआ और वे मुनिदीक्षा लेकर वनवास चले गये और मोक्ष प्राप्त किया।

7. **हिन्दू मत** - कुंभकर्ण छः माह सोता था और छः माह जागता था।

जैन रामायण - कुंभकर्ण जिनधर्म प्रेमी और आत्मज्ञानी था। साल में छः माह वह मौन लेकर आत्मसाधना करता था। उसके छ माह के मौन को छ माह की नींद के रूप में प्रचारित किया गया।

8. **हिन्दू मत** - राम के वनवास से दुखी होकर पिता दशरथ की मृत्यु हो गई।

जैन रामायण- दशरथ की मृत्यु नहीं हुई बल्कि संसार की स्वार्थ वृत्ति को जानकर मुनिदीक्षा ले ली।

9. **हिन्दू मत** - लंका से लौटने के बाद राम ने सीता को वनवास दे दिया और बाद में अग्निपरीक्षा ली। जैन रामायण -सीता ने दुःखी होकर धरती माता से अपनी गोद में जगह का निवेदन किया, तभी धरती फटी और सीता उसमें समा गईं।

जैन रामायण- अग्नि परीक्षा के बाद राम ने सीता से वापस अयोध्या चलने का आग्रह किया परन्तु जगत की असारता देखकर सीताजी को वैराग्य हो गया और उन्होंने अयोध्या जाने से मना कर दिया। फिर आर्यिका पृथ्वीमति माताजी से दीक्षा का निवेदन किया। इस प्रसंग को पृथ्वी में समा गईं के रूप में समझा जाने लगा।

10. **हिन्दू मत** - हनुमान, सुग्रीव, बालि, अंगद आदि सैनिक वानर (बंदर) थे।

जैन रामायण - ये वानर नहीं बल्कि वानर वंश के थे और इनके सेना के ध्वज में बंदर का चिन्ह होता था परन्तु भ्रमवश लोग इन्हें बंदर के रूप में देखते हैं। हनुमान तो सर्वांग सुन्दर कामदेव थे और उसी भव से मोक्ष गये।

11. **हिन्दू मत** - सुग्रीव ने बालि का वध किया था ।

जैन रामायण - सुग्रीव से विवाद होने के बाद बालि को अपनी भूल का एहसास हुआ और वे मुनिदीक्षा लेकर वनवास चले गये और मोक्ष प्राप्त किया।

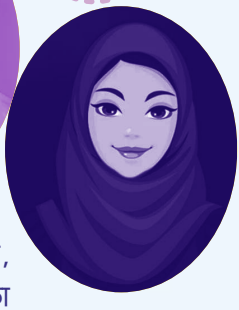

प्रसिद्ध विश्व विख्यात मुस्लिम लेखिका का खुला पत्र

आपकी विवाहित महिलाओं ने माथे पर पल्लू तो छोड़िये, साड़ी तक पहनना छोड़ दिया... दुपट्टा गायब हम मुस्लिमों ने आपका पतन नहीं किया।

महिलाओं माथे पर बिन्दी और मांग में सिन्दूर सौभाग्य का प्रतीक माना जाता था न.... और कोरे मस्तक और सूनी मांग को अशुभ और अमंगल कहते थे न.... आपने न सिन्दूर है न माथे पर बिन्दी। आपकी महिलाओं ने भी आधुनिकता और फैशन की होड़ में अपने संस्कार छोड़ दिये, इसमें मुसलमान कहाँ दोषी हैं...?

आप लोग विवाह, सगाई जैसे संस्कारों पारम्परिक परिधान छोड़कर.. लज्जा विहीन प्रीवेडिंग जैसी फूहड़ रस्में करने लगे और जन्म दिवस, वर्षगांठ जैसे अवसरों को... ईसाई बर्थ डे और एनिवर्सरी में बदल दिया ... क्या यह हमारी गल्ती है?

हमारे यहाँ जब बच्चा चलना सीखता है तो बाप की उंगलियाँ पकड़कर इबादत/ नमाज के लिये मस्जिद जाता है और जीवन भर नमाज/ इबादत को अपना फर्ज समझता है.. आपने तो स्वयं मंदिर जाना छोड़ दिया और जाते हैं तो केवल 10 मिनिट के लिये वह भी तब जब भगवान से कुछ मांगना हो या किसी संकट से छुटकारा पाना हो अब यदि आपके बच्चे मंदिर नहीं जाते और उसके संस्कार नहीं जानते कि मंदिर जाकर करना क्या है ईश्वर की उपासना का क्या अर्थ है ? तो क्या ये सब हमारा दोष है

आपके बच्चे कान्वेंट में पढ़ते हैं और पोयम सुनाते हैं तो आपका सर गर्व से ऊँचा हो जाता है। होना तो यह चाहिये वे बच्चे आपको कोई मंत्र, कोई श्लोक, भजन आदि सुनाते तो आपको गर्व होता। आपका बच्चा हर दिन कॉन्वेंट स्कूल जाकर ईसा मसीह की प्रार्थना पढ़ता है पर आपके धर्म के भगवान को याद भी नहीं करता तो आपको शर्म क्यों नहीं आती क्या आपके मन में इस बात का कोई दुःख है...?

हमारे घरों में किसी बाप का सिर तब शर्म से झुक जाता है जब उसका बच्चा रिश्तेदारों के सामने कोई दुआ या कलमा नहीं सुना पाता। हमारे घरों में बच्चा बोलना सीखता है तो हम सिखाते हैं कि बड़ों को सलाम करो। आप लोगों ने प्रणाम और नमस्कार को हाय और हैलो में बदल दिया .... तो क्या इसके लिये हम अपराधी हैं ?

हमारे मजहब का बच्चे कान्वेंट से पढ़ते हुये भी उर्दू अरबी सीख लेता है और हमारी धार्मिक पुस्तक पढ़ने बैठ जाता है क्या आपका बच्चा पाठशाला जाता है उसे संस्कृत तो छोड़िये हिन्दी भी शुद्ध नहीं आती ... क्या यह भी हमारा दोष है ?

आपकी दिनचर्या बदली, वेशभूषा बदल गई और खान पान भी बदल गया। आलू, प्याज और लहसुन खाना तो सामान्य बात है अब आपके घर के बच्चे शराब और मांसाहार में डूब रहे हैं।

आपके पास सब कुछ था... संस्कृति, इतिहास, परम्परायें। आपने उन सब को आधुनिकता की अंधी दौड़ में त्याग दिया। आपने अपनी संस्कृति की जड़ों को स्वयं ही नष्ट किया है और आज भी आप यह समझने तैयार नहीं हैं।

आज आपकी समाज भयभीत है, उसे अपनी संस्कृति और सभ्यता के नष्ट होने का डर है इसका कारण भी आप और आपकी समाज का नेतृत्व है। यदि अपने को बचाना है तो दूसरों को दोष देना बंद कीजिये और स्वयं जागृत हो जाइये।

आईये! कुछ सीखिये पक्षियों से

रात को कुछ नहीं खाते।

रात को नहीं घूमते।

अपने बच्चों को सही समय पर सिखाते हैं।

ठूस-ठूस कर कभी नहीं खाते। आपने कितने ही दाने डाले हों, थोड़ा खाकर उड़ जायेंगे, साथ में कुछ नहीं ले जाते।

रात होते ही सो जाते हैं और सुबह जल्दी उठ जाते हैं और गाते-चहकते हुये दिन की शुरुआत करते हैं।

अपने शरीर से खूब काम लेते हैं। दिन में कभी आराम नहीं करते। उन्हें हार्ट, किटनी, डायबिटीज, लकवा आदि रोग नहीं होते।

अपना आहार कभी नहीं बदलते।

बीमारी आने पर आहार करना छोड़ देते हैं, तभी खाते हैं जब पूरी तरह ठीक हो जाते हैं।

अपने बच्चों को भरपूर प्यार देते हैं।

प्रकृति से उतना ही लेते हैं जितनी आवश्यकता हो।

इस तथ्य के माध्यम से हमें भी संदेश मिलता है, समझदारों को संकेत ही बहुत है।

जिनशासन की प्रभावना

अहिछत्रपुर राज्य में सोमदत्त मंत्री की गर्भवती पत्नी को आम खाने की इच्छा हुई। मंत्री आम लेने चला तो उस समय आम का मौसम न होने पर भी एक वन में एक पेड़ पर रसदार आम झूलता हुआ दिखाई दिया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस मौसम में आम कैसे? उसने पेड़ के पास जाकर देखा तो वहाँ एक दिगम्बर मुनिराज ध्यान की मुद्रा में बैठे थे। शायद उन्हीं के प्रभाव से उस पेड़ पर आम था।

मंत्री के निवेदन पर मुनिराज ने वैराग्य उपदेश दिया। उपदेश सुनकर मंत्री दिगम्बर दीक्षा लेकर मुनि बने गये और वन में जाकर आत्मसाधना करने लगे।

सोमदत्त मंत्री की पत्नी ने यज्ञदत्त नामक पुत्र का जन्म दिया। वह पुत्र को लेकर मुनिराज सोमदत्त के पास आई, परन्तु संसार से विरक्त मुनि ने उससे मिलने से मना कर दिया। इससे क्रोधित होकर वह स्त्री बोली - अगर साधु ही होना था तो मुझसे शादी क्यों की ? मेरा जीवन क्यों बिगाड़ा ? अब इस पुत्र को कौन पालेगा ? ऐसा कहकर उस बालक को वहीं छोड़कर चली गई। इस बालक के हाथ पर वज्र का चिन्ह होने से उसका नाम व्रजकुमार पड़ा। बाद में एक विद्याधर राजा ने उसका लालन पोषण किया। वज्र कुमार के युवा होने पर विवाह हुआ और उसे मालूम चला कि उसके असली पिता कोई और हैं तो वह अपने असली पिता की खोज में निकल गया। व्रजकुमार को एक पर्वत के ऊपर से जाते समय ध्यान में लीन सोमदत्त मुनिराज के दर्शन हो गये और उसने भी मुनि दीक्षा ले ली। वे दिगम्बर साधु के रूप जिनशासन की प्रभावना करते हुये मथुरा पहुँचे।

मथुरा नगरी में एक गरीब लड़की जूठन खाकर पेट भरती थी, उसे देखकर अवधिज्ञानी मुनिराज ने कहा - देखो कर्म की विचित्रता। यह जूठन खाने वाली लड़की एक दिन इस राज्य की पटरानी बनेगी। मुनिराज की यह बात सुनकर एक बौद्ध भिक्षु उसे अपने मठ में ले गये और उसका नाम बुद्धदासी रखा और उसे बौद्ध धर्म की शिक्षा और संस्कार दिये। जब वह युवा हुई तो देश के राजा उस पर मोहित हो गये और विवाह का प्रस्ताव दिया

परन्तु राजा की पत्नी उर्मिला जिनधर्म की पक्की श्रद्धानी थी। इसलिये मठ के लोगों ने कहा - यदि स्वयं बौद्ध धर्म स्वीकार करें और बुद्धदासी को पटरानी बनाने का निर्णय करें तभी हम विवाह की स्वीकृति देंगे।

बुद्धदासी के रूप में मोहित राजा ने बिना सोचे समझे यह बात मान ली और राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया और बुद्धदासी को पटरानी बना दिया। मोह के नशे में राजा को पूर्णिमा के प्रकाश और अमावस्या के अंधकार में, पीतल और सोने में, कौये और कोयल की आवास में अंतर नहीं लगता। इसके बाद बुद्धदासी बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार करने लगी।

दूसरी ओर रानी उर्मिला जिनधर्म की परम भक्त थी। उसने हर साल की तरह इस साल भी अष्टान्हिका पर्व में जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा निकालने की तैयारी की, परन्तु बुद्धदासी को यह सहन नहीं हुआ। उसने राजा से कहकर जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा रुकवा दी और बौद्धों की रथयात्रा पहले निकलवाने को कहा।

इस घटना से रानी उर्मिला बहुत दुखी हुई और उपवास धारण कर वन चली गई और मुनि सोमदत्त और मुनि वज्रकुमार के सामने बैठ गई। उसने मुनिवरों से प्रार्थना की कि वे जैन धर्म पर आये इस संकट का निवारण करें।

रानी की जिनधर्म के प्रति भक्ति देखकर मुनि वज्रकुमार बहुत प्रभावित हुये। उन्होंने दर्शन के लिये आये विद्याधर राजा दिवाकर और अन्य विद्याधरों से कहा कि आप सब जिनधर्म के परम भक्त हैं। मथुरा नगरी में जिनधर्म पर संकट आया है, उसे आप दूर कर सकते हैं। दिवाकर राजा को धर्म का प्रेम तो था ही, मुनिराज के उपदेश से और प्रेरणा मिल गई।

वे मुनिराज को नमस्कार तुरन्त मथुरा नगरी आ गये और उन्होंने जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा बहुत धूमधाम से निकाली। हजारों विद्याधरों का प्रभाव देखकर राजा और बुद्धदासी आश्चर्यचकित रह गये और जिनधर्म से प्रभावित होकर उन्होंने आनंदपूर्वक जिन धर्म को स्वीकर कर लिया और इस उपकार के लिये रानी उर्मिला का उपकार माना।

उर्मिला रानी ने उन्हें जिनधर्म की वास्तविक महिमा समझाई। यह सब देखकर मथुरा के हजारों जीव भी उत्साहपूर्वक जिनधर्म की आराधना करने लगे। इस प्रकार मुनि वज्र कुमार और उर्मिला रानी के द्वारा जिनधर्म की बहुत प्रभावना हुई।

सही सोच

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री बचपन से बहुत ईमादार थे। बरसात के मौसम में रात्रि में एक बार वे अमरूद लेने बाजार गये। वहीं एक फल बेचने वाले से अमरूद के भाव पूछे। अमरूद वाले ने कहा - 10 पैसे के एक किलो। शास्त्रीजी ने सहज ही कहा कि बहुत मंहगा लग रहा है, सही मूल्य बताओ। अमरूद वाला बोला - बाबूजी! सही मूल्य है। गरीब आदमी इसमें क्या कमा लेगा? शास्त्रीजी वहाँ से जाने लगे तो उसने सोचा कि अब रात हो रही है। थोड़ा नुकसान ही सही, कम से कम माल तो निकल जायेगा तब वह बोला - बाबूजी! सारे अमरूद 2 रुपये के हैं, आप सारे अमरूद ले लीजिये और 1 रुपये दे दीजिये। इतना कहकर उसने सारे अमरूद कागज में रख दिये। तब शास्त्रीजी ने उससे कहा कि आप यह 1 रुपये लीजिये और मुझे आधे अमरूद ही दीजिये और बाकी आप कल आकर बेच देना। मैं किसी की मजबूरी का फायदा नहीं उठा सकता। आखिर आप भी कुछ कमाने के लिये इतनी मेहनत करते हैं।

लाल किला या जैन मंदिर

आगरा के ऐतिहासिक किले के बारे में यह कहा जाता है कि यह अत्यंत प्राचीन स्थान रहा है। यहाँ पहले बादलगढ़ का किला था, जिसकी नींव पर अकबर ने आज चार सौ पूर्व लाल पत्थर का किला बनवाया था। इस स्थान के निकट काले पत्थर के खंभे प्राप्त हुये हैं तथा एक जैन मूर्ति भी मिली थी जो पहले ताज म्यूजियम में रखी हुई थी। इस सम्बन्ध में इतिहासकार कालयिल ने कहा कि आगरा के किले के स्थान पर यमुना के किनारे कोई अति प्राचीन जैन मंदिर रहा होगा जिसे बाद में गिरवाया गया। रोशन मोहल्ला स्थित जैन मंदिर की मूर्ति के बारे में भी लोगों का कहना है कि यह किले की नींव रखते समय अकबर के समय में प्राप्त हुई थी। कई प्रमाणों से लाल किले के बनने के पूर्व उसी स्थान पर जैन मंदिर था।

- विशन कूपर

समाचार

मुंबई के जवेरी बाजार में महावीर जयंती महोत्सव संपन्न

मुम्बई के जवेरी बाजार स्थित श्री सीमंधर जिनालय भगवान महावीर जयन्ती के अवसर पर 31 मार्च से 3 अप्रेल तक श्री महावीर स्वामी पंचकल्याणक विधान सम्पन्न हुआ। साथ ही डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ के ''आत्मार्थी का जीवन'' विषय पर मांगलिक व्याख्यान संपन्न हुये। सम्पूर्ण विधि विधान श्री विराग शास्त्री, जबलपुर के निर्देशन में एवं श्री वीनूभाई शाह एवं श्री उल्लासभाई जोबालिया के संयोजन में सम्पन्न हुये।

आचार्य कुन्दकुन्द की साधना भूमि पोन्नूर में शिविर सम्पन्न

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द की साधना भूमि पोन्नूर मलै में 24 मार्च से 28 मार्च तक जिनदेशना आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित अंकुर शास्त्री भोपाल के मांगलिक नियमित व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही पण्डित सजल शास्त्री सिंगोड़ी, पण्डित संभव शास्त्री, पोन्नूर के भी प्रासंगिक व्याख्यान हुये। प्रातः श्री सीमंधर स्वामी पंचकल्याणक विधान पण्डित संभव शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन श्री विराग शास्त्री, जबलपुर द्वारा किया गया।

दिल्ली के आत्मसाधना केन्द्र में उपकार दिवस सम्पन्न

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के 134वें जन्म जयंती पर दिल्ली के घेवरा मोड़ स्थित आत्म साधना केन्द्र में दिनांक 18 मार्च से 22 मार्च तक आयोजित उपकार दिवस के अन्तर्गत गुरुवाणी मंथन शिविर, श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान के साथ आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन का दीक्षांत समारोह आदि अनेक आयोजन संपन्न हुये। इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के नियमित व्याख्यानों के साथ पण्डित ऋषभ शास्त्री, उस्मानपुर, पण्डित संदीप शास्त्री, पण्डित सोनू शास्त्री के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रातः विदुषी राजकुमारी दीदी की कक्षा का लाभ प्राप्त हुआ। विधान की विधि पण्डित अशोकजी उज्जैन, के निर्देशन में पण्डित भूपेन्द्र शास्त्री विदिशा, पण्डित अनिकेत शास्त्री भिण्ड के सहयोग से संपन्न हुई। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री जबलपुर निर्देशन में श्री नरेशजी लुहाड़िया के संयोजन में संपन्न हुये।

छिंदवाड़ा जिला जेल में जिनदेशना का शंखनाद

सक्रिय समाजसेवी श्री दीपकराज जैन के प्रयासों से 3 जून को स्थानीय जिला जेल में कैदियों के लिये सत्संग का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ ने मनुष्य पर्याय की दुर्लभता तथा श्री विराग शास्त्री ने जेल में शांति के मंत्र विषय पर व्याख्यान दिये। बाद में भक्ति के माध्यम से श्री विराग जी एवं पं.ऋषभजी शास्त्री, श्री संजय सिद्धार्थी ने कैदियों को भक्ति के रंग में सराबोर कर दिया। कैदियों ने भविष्य में अपराध न करने की प्रतिज्ञा ली।

ध्रुवधाम बांसवाड़ा में पंचकल्याणक महोत्सव सानंद सम्पन्न

श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट, बांसवाड़ा द्वारा रत्नत्रय तीर्थ ध्रुवधाम में पुनर्निमित मानस्तंभ की प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया। 21 मई से 24 मई तक आयोजित इस कार्यक्रम के प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर व निर्देशक श्री विराग शास्त्री, सह निर्देशक पण्डित रितेश शास्त्री बांसवाड़ा थे। इस कार्यक्रम में पण्डित राजेन्द्र कुमारजी जबलपुर एवं पण्डित देवेन्द्र कुमारजी बिजौलिया के प्रवचनों का विशेष रूप से लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम श्री महीपालजी ज्ञायक एवं श्री धनपालजी ज्ञायक के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

दमोह में पंचपरमेष्ठी मंडल विधान और जिनदेशना व्याख्यानमाला सम्पन्न

भगवान महावीर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, दमोह द्वारा सिविल वार्ड में 9 मार्च से 11 मार्च तक विधान और व्याख्यानमाला संपन्न हुई। इस कार्यक्रम में डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ, पं.विपिन शास्त्री नागपुर, डॉ. विवेक जी छिन्दवाड़ा के व्याख्यान सम्पन्न हुये। विधान की सम्पूर्ण विधि डॉ. विवेक जी के द्वारा सम्पन्न हुये। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

देवलाली में 25वां बाल संस्कार शिविर ऐतिहासिक रुप से सम्पन्न

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले बाल शिविरों की श्रृंखला का 25वाँ बाल संस्कार शिविर ऐतिहासिक रूप से आयोजित किया गया। देश का सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त यह शिविर अपने विशेष गतिविधियों के लिये जाना जाता है। इस शिविर में अनेक नये कार्यक्रमों के साथ 5 नवीन बालोपयोगी पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस शिविर में अनेक नगरों के 450 बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया। विगत 25 वर्षों से इस शिविर में अनवरत अपनी सेवा देने वाले श्री वीनूभाई आर. शाह एवं श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई का जिनदेशना समिति द्वारा अभिनंदन किया गया।

समाचार

जिनदेशना ने किया जिनशासन सेवकों का सन्मान

जिनदेशना समिति द्वारा जिनशासन की सेवा में अपने जीवन का अधिकांश समय समर्पित करने वाले मुम्बई निवासी श्री वीनूभाई शाह एवं श्री उल्लास भाई जोबालिया का देवलाली में आयोजित बाल शिविर के अन्तर्गत सन्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि दोनों साधर्मी देवलाली में विगत 25 वर्षों से प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले बाल शिविर के मुख्य कार्यकर्ता हैं। साथ ही देश में होने वाली आध्यात्मिक गतिविधियों में तन-मन-धन से सहयोग करते रहे हैं। श्री वीनूभाई श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के मंत्री पद पर कार्य कर रहे है इसके साथ मुम्बई में होने वाली आध्यात्मिक गतिविधियों के मूल आधारों में से एक हैं। पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली ने भी विगत 21 अप्रेल को ट्रस्ट की ओर से दोनों साधर्मियों का अभिनंदन किया था।

श्री महीपाल जी बांसवाड़ा - श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के महामंत्री श्री महीपाल ज्ञायक का उनकी निस्पृह सामाजिक सेवाओं के लिये बांसवाड़ा में आयोजित पंचकल्याणक के अवसर पर 22 मई को जिनदेशना द्वारा सन्मान किया गया। श्री महीपाल के समर्पण से बांसवाड़ा में रत्नत्रय तीर्थ ध्रुवधाम के निर्माण के साथ श्री सम्मेदशिखर में श्री कुन्दकुन्द कहान नगर रचना जैसे ऐतिहासिक कार्य संपन्न हुये हैं।

चहकती चेतना परिवार तीनों महानुभावों के धर्ममय जीवन के साथ उनकी स्वस्थता की मंगल कामना करता है।

छिन्दवाड़ा - यहाँ मुमुक्षु मंडल एवं जैन युवा फैडरेशन द्वारा 28 मई से 4 जून तक जैनत्व बाल-युवा संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में 200 बालक-बालिकाओं के साथ युवा और प्रौढ़ साधर्मियों ने लाभ लिया। इस कार्यक्रम में डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ एवं पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन के व्याख्यानों का लाभ मिला।सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित संजय सिद्धार्थी इंदौर के निर्देशन में सहयोगी विद्वानो के द्वारा संपन्न हुये।

नीमच में जिनमंदिर शिलान्यास - पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी के श्रुत प्रभावना योग में मध्यप्रदेश के नीमच नगर में दिनांक 10 और 11 मई को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा पण्डित रजनीभाई दोशी के निर्देशन में व पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, श्री विराग शास्त्री जबलपुर, श्री नगेशजी पिड़ावा, पण्डित अमित अरिहंत के सहयोग से जिनमंदिर का शिलान्यास संपन्न हुआ।

हमारे तीर्थ क्षेत्र

टिहरी गढ़वाल

प्राकृतिक सुन्दरता के लिये विख्यात उत्तराखण्ड के टिहरी में श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर अपनी सुन्दरता के लिये जाना जाता है। टिहरी गढ़वाल भगवान ऋषभदेव की निर्वाण भूमि कैलाशगिरि अष्टापद की वादियों में स्थित सुन्दर नगर है। इस जिनमंदिर की स्थापना पुरानी टिहरी में 5 जुलाई 1979 को में हुई। बाद में टिहरी बांध के निर्माण के कारण प्रतिमाओं को वहाँ से हटाकर 20 जून 2005 को नई टिहरी में बस स्टेण्ड के पास नवीन जिनमंदिर में स्थापित किया गया। इस शिखरयुक्त सुन्दर जिनमंदिर के साथ धर्मशाला और संत निवास भी है। यहाँ मात्र 4-5 घर की जैन समाज होने पर भी जिनमंदिर की व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है।

प्राकृतिक सुन्दरता के लिये घूमने आने वाले जैन धर्मावलम्बियों के लिये यह जिनमंदिर उनके जिनदर्शन के नियम की रक्षा करता है। यह अत्यंत दर्शनीय जिनमंदिर है।

चहकती चेतना

बाल संस्कार शिविर देवलाली की

झलकियाँ

चहकती चेतना

विभिन्न स्थानों पर आयोजित
कार्यक्रमों की झलकियाँ

महावीर ब्रह्मचर्य आश्रम, कारंजा

कंकूबाई efgyk आश्रम, कारंजा

छिंदवाड़ा

छिंदवाड़ा

सोनगढ़

बांसवाड़ा

चहकती चेतना

बाजार की बर्फ और कुल्फी न बाबा न...

कर्म प्रधान विश्व करि राजा
तो जस करहिं सो तसफल चाखा

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विलेपारला, मुम्बई के तत्वावधान में

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट
तीर्थधाम ज्ञानोदय, भोपाल द्वारा आयोजित

शनिवार से मंगलवार
12 से 15
अगस्त 2023

कार्यक्रम स्थल :
तीर्थधाम ज्ञानोदय
विदिशा-भोपाल रोड,
दीवानगंज, जिला-रायसेन

द्वितीय

जिन देशना यूथ कन्वेन्शन

by young for young...

LIVE ON जिन देशना

मंगल सान्निध्य :
- डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ
- श्री संजय जी शास्त्री, कोटा
- श्री विपिनजी शास्त्री, नागपुर

विशेष लाभ : विश्व विख्यात आध्यात्मिक गीत रचनाकार एवं सुमधुर कंठ के धनी पं. संजीव जी उस्मानपुर की भजन संध्या

निर्देशक : विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434
संयोजक : अमित अरिहंत, सागर 9588001360

आयु सीमा : 18 वर्ष से 50 वर्ष तक

रजिस्ट्रेशन की लिंक प्राप्त करने के लिए 9752756445 पर what'sapp द्वारा संपर्क करें

शुक्रवार-शनिवार-रविवार
8-9-10
सितंबर 2023

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट
विलेपारला, मुम्बई द्वारा आयोजित

तृतीय

जिन देशना यूथ कन्वेन्शन

by young for young...

कार्यक्रम स्थल :
संस्कार तीर्थ
शाश्वत धाम
उदयपुर
(राजस्थान)

मंगल सान्निध्य :
- श्री संजय जी शास्त्री, कोटा
- श्री विपिनजी शास्त्री, नागपुर
- श्री अभय शास्त्री, खैरागढ़
- श्री अनुभव जैन, करेली

निर्देशक : विराग शास्त्री, जबलपुर ९३००६४२४३४

रजिस्ट्रेशन की लिंक प्राप्त करने के लिए 9752756445 पर what'sapp द्वारा संपर्क करें

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट, उदयपुर